महामत कहे मेहेबूबजी, अब दीजे पट उड़ाए।
नैना खोल के अंक भर, लीजे कंठ लगाए।। ८४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे मेहबूब! धाम धनी! अब इस फरामोशी के परदे को हटा दो और हमारी आत्मा को जगाकर हमें अपने गले से लगा लो।

॥ प्रकरण ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ २३४६ ॥

धाम की रामतें–चरचरी

एक चित्रामन दिवालें बन, चढ़िए तिन पर धाए।
एक चुटकी लेके भागी ताली देके, कहे दौड़ मिलियो आए।। १ ।।

एक सखी दूसरी सखी को चुटकी बजाकर ताली देकर वन की दीवारों पर बने चित्रकारी पर दौड़कर चढ़ती है और कहती है, आकर मुझे छू लो।

एक गली घर में दे परिकरमें, उमंग अंग न माए।
एक का कपड़ा धाए के पकड़्या, खैंच चली चित्त चाहे।। २ ।।

एक सखी घर में ही उमंग से गलियों में परिकरमा लगाती है और दूसरी सखी का कपड़ा दौड़कर पकड़ती है और मनचाही तरफ खैंच ले जाती है।

छज्जे चढ़ एक दूजी देवें ठेक, यों कई ठेकतियां जाए।
एक दोऊ पांऊं ठेकें खेल विसेकें, जानों लगत न छज्जे पाए।। ३ ।।

एक सखी छज्जे पर चढ़कर दूसरी को ठेका देकर दौड़ती है। एक दोनों पांव से उछलकर खास खेल खेलती है। लगता है जैसे इनका पांव छज्जे पर लगता ही नहीं है।

सखियां चढ़ धाए छज्जे न माए, खेल रच्यो इन दाए।
एक दिवालों घोड़े तित चढ़ दौड़े, नए नए खेल उपाए।। ४ ।।

सब सखियां दौड़कर एक छज्जे पर चढ़ जाती हैं, लगता है छज्जे पर पूरी नहीं आएंगी। इस तरह का खेल खेलती हैं। कोई-कोई सखी दीवारों पर बने घोड़े पर चढ़कर दौड़ती हैं। नए-नए तरह के खेल बनाती हैं।

एक दूजी को ठेलें तीसरी हड़सेले, यों पड़ियां तीनों गिर।
कई और आए गिरें उपरा ऊपरें, उठ न सकें क्यों ए कर।। ५ ।।

एक सखी दूसरी को धकेलती है और दूसरी तीसरी को धकेलती है। तो इस तरह तीनों एक के ऊपर एक गिर पड़ती हैं और सखियां भी आ-आकर इन पर गिर पड़ती हैं तो यह नीचे से उठ नहीं पातीं।

एक दौड़ियां जाए दई हांसिएं गिराए, हुओ ढेर उपरा ऊपर।
एक खेलते हारी जाए पड़ी न्यारी, खेल होत इन पर।। ६ ।।

कई सखियां हंसती-हंसती दौड़ती हैं और दूसरी के ऊपर गिर पड़ती हैं, तो और आकर उनके ऊपर गिरती जाती हैं। कई सखियां खेल में हारकर अलग बैठ जाती हैं, दांव देने की वारी उनकी रहती है।

होवे इन बिध हांसी अंग उलासी, सूल आवत पेट भर।
एक सूल भर पेटे इन विध लेटें, ए देखो खेल खबर।। ७ ।।

इस तरह से अंग में उमंग भरकर हंसती हैं कि हंसी से पेट दर्द करने लगता है। इस पेट दर्द से जमीन पर लेटती हैं। यह इस तरह का खेल है।

Nijanand App

एक लेटतियां जाए सूल उभराए, उठावें कर पकर।
आई तिन हांसी मावे न स्वांसी, गिरी पकरे कर।। ८ ।।

एक हंसी के कारण पेट दर्द से लेटती है और दूसरी हंसते-हंसते उसका हाथ पकड़ कर उठाती है तो उसकी हंसी इतनी बढ़ जाती है कि इसको मारे हंसी के सांस काबू में नहीं आता। वह भी हाथ पकड़े-पकड़े गिर पड़ती है और हंसती है।

देखो इनको सूल मुख सनकूल, दरद न माए अन्दर।
सखियां बेसुमार हुओ अंबार, ए देखो नीके नजर।। ९ ।।

इनके हंसते हुए मुख को तथा पेट के दर्द को जो हंसी से समाता नहीं, देखो। यहां पर सखियां बेहिसाब इकट्ठी होकर आनन्द लेती हैं। यह अपनी आत्मा की दृष्टि से देखो।

स्याम स्यामाजी आए देख्यो खेल बनाए, सब उठियां हंसकर।
खेलें महामति देखलावें इन्द्रावती, खोले पट अन्तर।। १० ।।

श्री राजजी और श्री श्यामाजी उस समय आ गए। उन्होंने भी अच्छी तरह से इस खेल को देखा तो सब सखियां हंसते-हंसते उठीं। श्री इन्द्रावतीजी अपने तन से खेलकर दिखा रही हैं। श्री राजजी महाराज की पांच शक्तियों के स्वरूप महामतिजी इस संसार में इन्द्रावती के तन में बैठकर खेल का आनन्द ले रही हैं और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सबके परदे खोल रही हैं।

॥ प्रकरण ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ २३५६ ॥

रामत दूसरी

एक अंग अभिलाखी देवें साखी, कहे वचन विसाल।
एक कर कंठ बांहें मिल लपटाए, खेलतियां करें ख्याल।। १ ।।

कोई सखी मन में उमंग भरकर आती है और बाकी सखियों को खेल के सुन्दर वचनों से अच्छी तरह निर्देश देती है (समझाती हैं)। कोई सखी एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर खेल खेलती है।

एक आवें लटकतियां बोलें मीठी बतियां, चलें चमकती चाल।
एक आवें मलपतियां रंग रस रतियां, रहें आठों जाम खुसाल।। २ ।।

कोई सखी लटकती-मटकती चाल से मीठी बातें बोलती हुई आती है। कोई सखी मस्ती के रंग में डूबी हुई दिन-रात खुशी में मग्न रहती है।

एक आवें नाचतियां भमरी फिरतियां, दे भूखन पांउ पड़ताल।
एक गावती आवें तान मिलावें, कोई स्वर पूरें तिन नाल।। ३ ।।

एक सखी नाचती हुई, भंवरी फिरती हुई और पांव पटकती आती है जिससे उसके आभूषण बजते हैं। एक सखी गाती हुई, एक तान मिलाती हुई और एक उन्हीं के साथ स्वर पूरती हुई आती है।

एक माहें धाम निरखें चित्राम, देखतियां थंभ दिवाल।
एक निरखें नंग नूर भूखन जहूर, माहें देखें अपने मिसाल।। ४ ।।

एक सखी रंग महल के अन्दर, थंभ, दीवार और चित्रों को देखती है। एक सखी अपने आभूषणों के तेज को देखती है और उनमें अपनी शोभा देखती है।

Nijanand App